नारियल विकास बोर्ड की संकल्पना और परिकल्पना

कल्पवृक्ष अर्थात् *जीवन के वृक्ष* को दुनिया भर में लोगों द्वारा पूजा, सम्मान और प्यार किया जा रहा है। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व पुराने संस्कृत लेखन में नारियल का उल्लेख मिलता है। इस 21वीं सदी के दौरान, *समृद्धि का पेड़* पृथ्वी पर किसी भी अन्य उपलब्ध वृक्ष फसलों की तुलना में उत्कृष्ट पोषण गुणों के साथ सैकड़ों मूल्य वर्धित उत्पाद प्रदान कर रहा है। आजकल नारियल अपने औषधीय गुणों के लिए तेजी से ख्याति प्राप्त कर रहा है।

नाविबो के बारे में

नारियल विकास बोर्ड देश में नारियल की खेती एवं उद्योग की एकीकृत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 12 जनवरी, 1981 में अस्तित्व में आया। नाविबो कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय बैंगलूर, चेन्नै, गुवाहटी और पटना में है। बोर्ड के पांच राज्य केन्द्र हैं जो पित्तापल्ली (ओड़िशा), कोलकात्ता (पश्चिम बंगाल), ठाणे (महाराष्ट्र), विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) और पोर्ट ब्लेयर (अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह) में स्थित हैं। नई दिल्ली में बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र (एमडीआईसी) स्थापित है। बोर्ड ने केरल में आलुवा के पास वाष़क्कुलम में प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र और तिरुवनंतपुरम में क्षेत्र कार्यालय तथा देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिक स्थानों में 10 प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों की भी स्थापना की है।

संकल्पना

पूरी तरह से विकसित और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी नारियल उद्योग जो खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, नारियल किसान के लिए लाभकारी मूल्य और देश के लिए निर्यात आय में वृद्धि और भारत को नारियल क्षेत्र में मूल्यवर्धन और प्रसंस्करण में वैश्विक नेता बनाने में योगदान देता है।

परिकल्पना

- सभी पुराने और अनुत्पादक ताड़ों की पुनस्थापना और पुनर्रोपण कार्यक्रम के लिए अच्छी रोपण सामग्रियों की आवश्यक मात्रा को पूरा करने के लिए वाणिज्यिक नारियल बीज बागों को बढ़ावा देना।
- स्वास्थ्यपरक और पर्यावरण के अनुकूल अनुप्रयोगों के साथ उच्च मूल्य वाले नारियल उत्पादों और उपोत्पादों (खाद्य और खाद्येतर दोनों) पर ध्यान केंद्रित करके नारियल प्रसंस्करण में मूल्यवर्धन को बढ़ावा देना।
- लघु और सीमांत किसानों को वित्तीय सहायता देकर गैर पारंपरिक क्षेत्रों में नारियल की खेती को बढ़ावा देना और इस तरह देश में नारियल की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना।
- टिकाऊ आय के लिए नारियल बागों में वैज्ञानिक उत्पादकता सुधार पद्दतियों का प्रदर्शन करना और अंतराखेती करना।
- निरंतर जागरूकता अभियानों और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों के द्वारा नैदानिक परीक्षणों के संचालन के ज़रिए नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य गुणों को बढ़ावा देना।
- नारियल उत्पादों की बाजार पहुंच में सुधार करने के लिए प्रदर्शनियों, व्यापार मेलाओं और क्रेता-विक्रेता बैठकों का आयोजन करके खरीददार देशों और आला बाजारों में बाजार संवर्धन अभियान चलाना।
- नारियल के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना और इस प्रकार मुख्य रूप से किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के ज़रिए किसानों की आय दोगुना करना।
- स्वास्थ्यपरक और मांग उन्मुखी मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों यानी विर्जिन नारियल तेल, नारियल तेल, दूध, दूध पाउडर, डेसिकेटड नारियल, नीरा, डाब पानी आदि को बढ़ावा देना।
- देश में नारियल उद्योग को सशक्त बनाने के लिए किसानों/उद्यमियों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- प्रमुख शहरों में कोकोनट पॉइंट, खुदरा व्यापार नेटवर्क आदि स्थापित करके मूल्य वर्धित उत्पादों के विपणन के लिए बाजारों की खोज करना।
- उत्पाद विशिष्ट प्रसंस्करणकर्ताओं का कन्सोर्शियम बनाने के लिए प्रसंस्करण इकाइयों का एकीकरण।
- प्राधिकृत व्यापार पोर्टलों के माध्यम से उत्पादों के ई-विपणन को प्रोत्साहित करना।